8

22 AUG 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL3**

Name: VIVESH **Mobile Number:** ____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** Awake-19/F011

Center & Date: M. Ngr. 22/08/19 **UPSC Roll No. (If allotted):** 0877016

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

8

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिउ फेरा?।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जौंरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।
बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झँखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

निर्गुण भक्ति काव्यधारा की प्रेमाख्यानक कविता के प्रतिनिधि रचनाकार 'मलिक मुहम्मद जायसी' ने भारतीय संस्कृति के तत्वों को शामिल कर बारह मासा वर्णन को अपने काव्य में स्थान दिया है। प्रमाण हैं ये पंक्तियां जो 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खण्ड' से ली गयी हैं।

जायसी नागमती के वियोग को भारतीय नारी के वियोग के रूप में चित्रित करते हैं। बारह मास का समय बीत जाने पर रत्नसेन के वियोग में नागमति की स्थिति यह होगयी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हर सांस के साथ दुःखानुभूति हो रही है। हर पहर उसे चैन नहीं पड़ रहा है। उसके लिए यह पीड़ा असहनीय है। इसीलिए संध्या समय पति के इंतजार में रास्ते को देखकर प्रतीक्षा कर रही है। विरह में देह कोयले जैसी काली होकर क्षीण हो गयी है मानो शरीर में माँस की उपस्थिति न हो। न तो शरीर में रक्त बचा है और आंसुओं से नयन भीगे जा रहे हैं। इस विरहावस्था में नागमती निवेदन करती हैं कि हे पति! मेरी तरफ भी देखो और लौट आओ।

विशेष:-

* भाषा अवधी
* आत्मकता के साथ विरह वर्णन
* तिल - तिल, जुग - जुग - पुनरुक्ति
  पहर - पहर, सहस - सहस अलंकार
* कड़वक शैली जिसमें चौपाईयों के बाद दोहे का क्रम दिया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

सगुण-निर्गुण विवाद के में एक सार्थक हस्तक्षेप 'भ्रमरगीत' में 'सूरदास' जी ने गोपियों के विरह का भी अति मार्मिक चित्रण किया है। यही विरह का स्वर इन पंक्तियों में दृष्टिगत है। गोपियों का आपस का संवाद है जिसमें श्रीकृष्ण के दर्शन की अभिलाषा की गयी है

विरह से गोपियों की स्थिति यह हो गयी है कि न तो वे चांद का दर्शन करने में सक्षम हैं और ना ही स्व को रोकने में। इस विरह से रातें बीत जाती है किंतु उनके लिए सो पाना कठिन हो रहा है क्योंकि श्रीकृष्ण का प्रेमपाश उन्हें बांधे रखता है। जब से कमल रूपी नयन वाले

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

श्रीकृष्ण जी उनसे बिछुड़े हैं उनकी आँखों में केवल आंसू ही आंसू रहते हैं। शीतल चांद भी आग के समान लगता है ऐसे में कोई कैसे धैर्य धारण कर सकता है सूरदास जी कह रहे हैं जो भी कार्य या यत्न किए जा रहे हैं वे श्रीकृष्ण जी के दर्शन बिना अधूरे हैं।

ब्रज भाषा में लिखी गई पंक्तियों में सुंदर उत्प्रेक्षा की योजना है। 'शीतल चंद आगिनी सम लागत' में उपमा अलंकार है। दो वर्ण की आवृत्ति के साथ अंत्यानुप्रास की मौजूदगी है 'कमलनयन' में बहुव्रीहि समास की योजना है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।

तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

रीतिकालीन रीतिबद्ध कवि 'बिहारीलाल' की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' में बिहारी ने संयोग श्रृंगार के साथ-साथ भक्ति के दोहों को भी शामिल किया है। प्रस्तुत दोहा इसी श्रृंखला में लिखा गया है

कवि बिहारी श्रीकृष्ण जी से निवेदन कर रहे हैं कि मैंने भली प्रकार आपसे निवेदन किया था आपसे गुहार लगाई थी किंतु आपने अपने कानों से सुनने में आनाकानी कर दी। ऐसा लगता है मानो हाथी को तार देने के बाद अपने भक्तों पर दया करना त्याग दिया है। बिहारी व्यंग्य के माध्यम से श्रीकृष्ण को अपने ऊपर ध्यान देने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:-

* पंक्ति के अंत में 'रि' वर्ण की आवृत्ति से अंत्यानुप्रास की योजना

* "तज्यो मानो तारन बिंदु" में उपमा अलंकार

* 'तज्यो', 'मनो' जैसे शब्द ब्रज की विशेषताएँ बताते हैं जो औकारांत बहुलता युक्त भाषा है।

* बिहारी ने अन्य भक्ति में इसी प्रकार का निवेदन किया है-

कौन भांति रहिहै बिरदु व देखिबी मुरारि
बीधे मौसों आइके गीधे गीधहि तारि॥

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

साहित्यिक प्रतिमाओं से पुल 'निराला' का आत्मविश्वास 'राम की शक्ति पूजा' में विशेष रूप से व्यक्त हुआ है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने 'राम' के मिथक को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर इस कविता की रचना की है।

यह प्रसंग 'रवि हुआ अस्त' के पश्चात् सेना के विश्राम के समय निराश राम की रात्रि के दौरान का प्रकृति का चित्रण है।

रात्रि का समय व घन अंधकार राम में निराशाभाव का प्रतीक है जिसका कारण है 'अन्याय है जिधर उधर शक्ति' यह निराला का स्वयं का निराशा भाव भी है तो तत्कालीन संदर्भों में राष्ट्रीय आंदोलन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के नेतृत्व गांधीजी का भी है।

इस घोर अंधकार के कारण दिशाओं का ज्ञान भी नहीं हो पारहा है। चारों दिशाओं की पवनें भी स्तब्ध है। पीछे समुद्र अप्रतिहत गरज रहा है। यहाँ समुद्र के (जल) वे राम के पक्ष में ना होने का संकेत है। पूरी पृथ्वी को धारण किए ~~बोलना~~ राम मानो ध्यान मग्न हैं। ~~बिके~~

'विशेष'

* 'अमानिशा', 'अप्रतिहत' तत्सम बहुल भाषा का प्रयोग
* 'उगलता गगन अंधकार' के जरिये जड़ प्रकृति पर चेतना का आरोपण कर प्रकृति का मानवीकरण किए जाने का प्रयास
* प्रथम दो पंक्तियों में 'र' वर्ण तथा अन्तिम दो पंक्तियों में 'ल' वर्ण की आवृत्ति से अंत्यानुप्रास।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता की खोज ~~समस्~~। राष्ट्र कवि 'मैथिली शरण गुप्त' ऐतिहासिक संदर्भों में करते हैं जो उनकी महत्वपूर्ण रचना 'भारत भारती' में दृष्टिगत होता है। प्रमाण हैं ये पंक्तियाँ जो

हम क्या थे क्या हैं और क्या होंगे अभी

में क्या थे और क्या है वाले भाव की अभिव्यक्ति है

गुप्त जी बता रहे हैं कि भारत वर्ष हमेशा से ही ज्ञान में भी समृद्ध रहा है यहाँ कविता एक आनंददात्री शिक्षिका जैसी थी जो जन्म से ही श्री राम की अनुगामिनी अर्थात् पालन करने वाली थी। लेकिन वर्तमान में अब यह केवल कामिनी ही रह गयी है और वह भी बिना प्रकाश की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अब यह केवल अंधेरी रात ही रह गयी है। अर्थात् कविता के महत्वपूर्ण तत्वों की अनुपस्थिति हो गयी है। गुप्त जी ने यह भी कहा है-

सिर्फ मनोरंजन न कविता का लक्ष्य होना चाहिए इसमें उचित उपदेश का मर्म होना चाहिए।

विशेष :

* आनन्ददात्री शिक्षिका, ज्योत्स्ना आदि शब्द तत्सम शब्दों की बहुलता के परिचायक
* यामिनी शब्द का रात्रि के लिए सुंदर पर्यायवाची प्रयोग
* मुक्तक छंद में लिखी गयी पंक्तियाँ
* भाषा - खड़ी बोली
* अभिधा शब्द शक्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा है।' इस अभिमत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल जी ने सूरसागर में व्यक्त गोपियों के विरह की की तुलना रामचरितमानस में सीता के विरह की तुलना करते हुए इसे बैठे ठाले का धंधा कहा है।

शुक्ल जी का मानना है कि विरह में गांभीर्यता का अभाव है। गोपियाँ श्रीकृष्ण से भौगोलिक रूप से अधिक दूर नहीं है जब चाहे श्रीकृष्ण से मिल सकती हैं।

वहीं दूसरी ओर विजय देव नारायण साही ने सूरदास की गोपियों के विरह को अत्यंत मार्मिक माना है तथा कहा है कि "गोपियों के विरह की गंभीरता को भौगोलिक दूरी से नहीं नापा जा सकता। विरह में भौगोलिक दूरी से कहीं अधिक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मानसिक दूरी का महत्व होता है। गोपियों का विरह इसी मानसिक दूरी का परिचायक है। साथ ही गोपियाँ मान की स्थिति में है।"

यद्यपि गोपियों के समक्ष कोई ~~मानसिक~~ संकट उपस्थित नहीं है जैसा सीता के समक्ष है। सीता शत्रु के चंगुल में है। किंतु गोपियाँ अपने आत्मसम्मान को लेकर सजग है जो प्रियतम से दूरी बढ़ा रहा है। यही कारण है कि वे कहती हैं-

अँखियाँ हरिदर्शन को भूखी
कैसे रहें रूप रस राँची, ये बतियाँ सुनि रूखी।

गोपियों की यह मानसिक दूरी उनकी भावनाओं को मार्मिक बना देती है और साथ ही गंभीर भी -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निसिदिन बरसत नयन हमारे
सदा रहति पावस ऋतु हमपें जबतें स्याम सिधारें।

गोपियों का विरह सीता की भांति एकमात्र आराध्य के प्रति है वे ऊधो को कहती हैं-

ऊधो मन न भए दस बीस
एक हुतो गयो स्याम संग को अवराधे ईस।

शुक्ल जी की मान्यता को आर्ज ग्रियर्सन ने भी खारिज किया है। उनका मानना है कि श्रीकृष्ण ब्रह्म के प्रतीक के रूप में है तथा गोपियाँ जीवात्मा का प्रतीक के रूप में। दोनों के बीच के मिलन का विरह उसी प्रकार का है जिस प्रकार जीवात्मा ब्रह्म से मिलने हेतु बेचैन रहती है

शुक्ल जी की मान्यता साहित्य को लोक-मंगल के भाव से देखने के कारण है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ उन्हें गांभीर्यता की अनुपस्थिति लगती है किंतु गोपियों का विरह किसी संदेहता के साथ नहीं जुड़ा। उस विरह में यद्यपि वेदना, मार्मिकता व भावुकता का समावेश है कहीं भी वह विरह अतिशयोक्तिपूर्ण तथा बनावटी नहीं लगता। जिन्हें इन पंक्तियों से प्रभाविकता मिलती है जिनमें ऊधो की उपस्थिति श्रीकृष्ण का एहसास कराती हैं-

ऊधो यों नागे भले जाए
तुम देखे जनु माधव देखे तुम त्रय ताप नसाए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

lease do not write
ything except the
uestion number in
is space)

(ख) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर एक मस्त हैं। मस्ति के क्रम में उन्होंने रचनाएँ की हैं। अपने को कवि कहने का वे चंच खंडन करते हुए लिखते है- मसि कागद छुवो नहिं कलम गहि नहीं हाथ। इन्ही कारणों से कबीर की भाषा पर आरोप लगाया जाता है कि यह काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरती।

ऐसा कहने के कई कारण है। पहला कबीर की भाषा व्याकरणिक नियमों से संगत नहीं है। इसमें कई तरह व्याकरणिक त्रुटियाँ आती गयी है। दूसरा कबीर की भाषा में शब्दों को किसी मानक के तहत शामिल नहीं शामिल किया गया है। तीसरा यह काव्य शास्त्र के प्रतिमानों अलंकार, शिल्प सौंदर्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि को पूरा करने में असमर्थ है।
कबीर की रचनाओं की तुलना समकालीन काव्यधाराओं के अन्य कवियों तुलसी, जायसी से करने पर यह कमियाँ दृष्टिगत होती हैं।

परन्तु सूक्ष्म मूल्यांकन करें तो ऐसा नहीं है। कबीर संत कवि हैं अतएव उनकी भाषा सधुक्कड़ी प्रवृत्ति की जिसे पंचमेल खिचड़ी कहा जाता है। इसमें फारसी, पंजाबी आदि शब्द शामिल हैं।

कबीर शब्द चयन के प्रति सजग थे प्रमाण है उनकी साखी

कबिरा कुता राम का मुतिया मेरा नाऊँ
गले राम की जेवड़ी जित खींचें तित जाऊँ
में प्रयुक्त 'राम का मुतिया' में मुतिया शब्द शब्द सजगता को प्रमाणित करता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की भाषा में बिंबात्मकता सघन रूप से उपस्थित है -

जल में कुंभ कुंभ में जल बाहर भीतर पानी
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना तत कहत ग्यानी

कबीर की भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। इसकी व्यंग्य क्षमता जिसमें बाह्य आडम्बरों, धार्मिक कुरीतियों पर चोट की गयी है।

कांकर पाथर जोरि कै मस्जिद लिया चुनाय
ता ऊपर बाँग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।
पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार
तातें तो यह चाकी भली पीस खाय संसार॥

भाषा की काव्यात्मक कसौटी काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों से निर्धारित नहीं हो सकती। भाषा संप्रेषणीय तथा जन ग्राही होनी चाहिए। कबीर की भाषा इसमें पूरी तरह सक्षम है। यही कारण है कि कबीर के दोहे आज भी जनता के बीच गाये जाते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायसी और कबीर निर्गुण भक्ति काव्यधारा के कवि हैं जिनमें दोनों में रहस्यात्मकता की उपस्थिति दिखती है। दोनों कवियों में रहस्यवाद के दो तत्व साधनात्मक रहस्यवाद व भावनात्मक रहस्यवाद उपस्थित हैं। अन्तर है तो आनुपातिक उपस्थिति का।

कबीर के रहस्यवाद में साधनात्मक रहस्यवाद तुलनात्मक रूप से अधिक है। कबीर नाथ परम्परा के कवि हैं अतएव कुण्डलिनी के महाकुण्डलिनी के मिलन में इस प्रभाव की अभिव्यक्ति होती है। प्रमाण है-

कबिरा यह घर प्रेम का खाला का घर नाहिं
सीस उतारे भुईं धरै सो घर पैसे नाहिं

इसी साधनात्मकता के कारण उनके काव्य में अंतर्मुखता भी दिखती है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो बिछुड़े है प्यारे से भटकते दर बदर फिरते
हमारा यार हममें है हमन को इंतजारी क्या।

कबीर के काव्य पर सूफी प्रभाव है जिसके कारण भावनात्मक रहस्यवाद उपस्थित नजर आता है। वह चाहे मिलन की मस्ती, विरह की तड़प के रूप में मौजूद हो। या प्रेम तत्व की उपस्थिति।

जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहिं राम
ते नर इस संसार में उपजि भये बेकाम

जायसी प्रेमाख्यानक काव्यधारा के कवि है अतएव उन पर भावनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव अधिक है। यही कारण है कि उनका रहस्यवाद बहिर्मुखी है जो प्रेम का विस्तार कर उसे मानुष प्रेम के रूप में तब्दील कर देता है तभी जायसी कहते हैं- मानुष प्रेम भयो बैकुण्ठी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायसी ने ~~सम्मान~~ असीम सत्ता तथा व्यक्ति के मध्य प्रेम तत्व को महत्व दिया और इसी को मोक्ष प्राप्ति का आधार बनाया। इश्क मिजाजी से इश्क ~~ह~~ हकीकी ~~ह~~ की यात्रा में नारी को ब्रह्मात्मा तथा बंदे को जीवात्मा के रूप में स्थापित कर प्रेम की डोर से संबंध स्थापित किया।

जायसी के यहाँ भी साधनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव दिखता है -

पिउ हृदय मँह भेंट ना होहि
कोरे मिलन कहौ केहि रोई॥

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि दोनो के यहाँ रहस्यवाद काव्य में घुला मिला है। साधनात्मक तथा भावनात्मक दोनों ~~की~~ दोनों के यहाँ उपस्थिति है। तुलनात्मक रूप से कबीर के यहाँ साधनात्मक रहस्यवाद अधिक है तो जायसी के यहाँ भावनात्मक।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न या के अतिरिक्त कुछ लिखें।

ease do not write thing except the estion number in s space)

3. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

काव्य में समासोक्ति तथा अन्योक्ति दो विधाएँ है। अन्योक्ति से आशय किसी कथन के दो अर्थों से है जिसमें प्रस्तुत अर्थ की तुलना में अप्रस्तुत अर्थ का भी पर्याप्त महत्व होता है जबकि समासोक्ति में अप्रस्तुत अर्थ प्रस्तुत अर्थ को प्रतिध्वनित नहीं करता मुख्य अथवा प्रस्तुत अर्थ की ही होती है

शुक्ल जी ने पद्मावत को समासोक्ति ही माना है। जिसके कई कारणों को उन्होंने व्यक्त भी किया है। वहीं जार्ज ग्रियर्सन इसे अन्योक्ति मानते हैं।

पद्मावत को अन्योक्ति कहने का आधार इसके अंत में लिखी गयी पंक्तियों में प्रतीक योजना के कारण है जिसमें राजा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रत्नसेन को बंदे का प्रतीक माना है। पद्मावती को जीवात्मा का प्रतीक माना है। नागमति को दुनिया धंधा, खिलजी को माया, आकुलि क्लिष्ट को आपुर थकियों, हीरामन तोते को गुरु का प्रतीक माना है। इन प्रतीको की योजना पद्मावत को कहरी ढांचे में अन्योक्ति के रूप में उचित ठहराती है।

किंतु सम्पूर्ण दृष्टि से मूल्यांकन करें तो यह समासोक्ति ही नजर आती है जिसके कई कारण हैं। पहला यह प्रतीक योजना रचना के अंत में है अतएव इसके प्रक्षिप्त होने की संभावना अधिक है। दूसरा यह केवल रचना के अंतिम हिस्से में है। पूरी रचना में यह प्रतीक योजना नहीं दिखती। तीसरा रचना के अर्थ को बिना प्रतीक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

योजना के भी समझा जा सकता है
शुक्ल जी का मानना है कि समासोक्ति की
प्रक्रिया में कहीं भी प्रतीक योजना की आवश्-
यकता नहीं पड़ती। इसे इसके मूल अर्थ
में ही समझा जा सकता है।

पद्मावत एक ऐतिहासिक तथा लोककथा
पर आधारित काव्य है जिसमें कथा स्वभाविक
रूप से आगे बढ़ती है। रचना पढ़ने के क्रम
में प्रस्तुत अर्थ ही मुख्य अर्थ के रूप में
स्थापित है। साथ ही यदि प्रतीक योजना
को माना भी जाए तो यह तार्किक नहीं है
क्योंकि नागमति को दुनिया धंधा कहा
गया है तो रत्नसेन द्वारा नागमति को
त्यागा नहीं जाता। साथ ही अंत में
पद्मावती तथा नागमती की भूमिका

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समान है क्योंकि दोनों जौहर करती हैं।

अतएव हम कह सकते हैं और यह माना भी गया है कि पद्मावत में प्रस्तुत अर्थ ही मुख्य अर्थ है अतएव यह समासोक्ति के ~~सम~~ अधिक करीब है। अप्रस्तुत अर्थ अतिसीमित रूप से उपस्थित है उसकी स्वतंत्र उपस्थिति नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ''ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध ने रीती विचारधारा को यथित रूप से नहीं स्वीकारा। उन्होंने मार्क्सवाद को स्वीकारते हुए भी शिल्प को पर्याप्त महत्व दिया है। फैण्टसी शिल्प में लिखते हुए शिल्प शास्त्रीय गुणों से ब्रह्मराक्षस को लैस किया जिसमें बिंबात्मकता महत्वपूर्ण गुण है।

ब्रह्मराक्षस की शुरुआत ही बिंबात्मकता से हुई है जहाँ उन्होंने लिखा है

शहर के उस ओर खण्डहर की तरफ
परित्यक्त सूनी बावड़ी
के भीतरी
ठंडे अंधेरे में।

ब्रह्मराक्षस कविता बिंब निर्माण में एक नवीनता का परिचय देती है। यह नवीनता मुक्तिबोध द्वारा अंतर्मन के बिम्बों को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्थापित करना है। अवचेतन व अचेतन मन की गहराईयों को बिंबों से उभारा गया है -

कावड़ी को घेर
डालें खूब उलझी हैं
खड़े हैं मौन औदुम्बर

बिंबात्मकता की यह नवीनता ही है जो मुक्तिबोध को अंधकार में बिम्बात्मकता खोजने का साहस प्रदान करती है जिसे निराला के अतिरिक्त कोई नहीं जुटा पाया। ब्रह्मराक्षस में मुक्तीबोध ने लिखा है -

खूब ऊँचा एक जीना सांवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ
- - - -
एक चढ़ना औ उतरना
पुनः चढ़ना औ लुढ़कना

ब्रह्मराक्षस में बिम्ब अपने अनेक रूपों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में व्यक्त हुए हैं। स्पर्श बिंब, गतिशील बिंब, ध्वन्य बिंब आदि। ~~स्पर्श~~ ~~स~~ गतिशील बिंब, ध्वन्य बिंब व संश्लिष्ट बिंब का यह सुंदर उदाहरण है-

तन की मलिनता दूर करने के लिए, प्रतिपल
पाप छाया दूर करने के लिए दिन रात
स्वच्छ करने
ब्रह्मराक्षस
घिस रहा देह, हाथ के पंजे बराबर
बाँह छाती मुँह छपाछप
खूब करते साफ
फिर भी मैल
फिर भी मैल

मुक्तिबोध शिल्प के सजग कवि हैं। यह ब्रह्मराक्षस का शिल्प प्रमाणित करता है इसमें भी विशेषकर उनकी बिंब प्रस्तुती जो पारंपरिक बिम्बों की अभिव्यक्ति तो है ही, इसमें नवीनता का समावेश है। यह अद्वितीय विशेषता के रूप में स्थापित है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धता पर प्रकाश डालिये। 15

सूर के काव्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है इसमें निहित वक्रता व वाग्विदग्धता। कथनों की यह वक्र शैली है जिसमें कई तरह से टेढ़े मेढ़े ढंग से संवाद किया जाता है। गोपियों व उधव के संवाद में गोपियों को इस शैली का प्रयोग किया है।

एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि भावनाओं के शिखर पर पंहुचा हुआ व्यक्ति सीधे सीधे अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर पाता। श्रीकृष्ण प्रेम, उसके विरह में गोपियाँ इसी भावना के शिखर पर हैं जो उनकी संवाद शैली को वक्र व वाग्विदग्ध बना देती है और वक्र शैली में ही प्रश्न करती है-

तिरगुन कौन देश को वासी
को जनक को जननी कथित कौन नारि कोदासी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोपियों ने इस शैली का प्रयोग किया क्योंकि वे एक धर्म संकट की स्थिति में है। श्रीकृष्ण के आने का इंतजार था और उन्होंने ऊधव को दूत बनाकर भेजा। ऊधव मेहमान है अतएव उनका सम्मान बनाए रखना चाहती है और अपने आत्मसम्मान को भी।
इसीलिए वक्र शैली में कहती है-

आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादि खेप गुन ग्यान जोग की ब्रज में आन उतारी

यहाँ तक कि श्रीकृष्ण पर भी व्यंग्य करने से नहीं चूकती

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए
इक अति चतुर हुते पहिले से ही, अरु करि नेह दिखाए
जानी बुद्धि बड़ी जुवतिन की जोग संदेश पठाए

यह वक्र शैली ही थी जो गोपियों को न केवल निर्गुण सगुण के संवाद में अपना तर्क

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत करने को सक्षम बनाती है बल्कि अपने श्रीकृष्ण प्रेम को प्रदर्शित करने हेतु माध्यम प्रदान करती है। जैसे वह

"अँखियाँ हरिदरशन की भूखी"

"लरिकाई को प्रेम अलि कैसे छूटे"

के माध्यम से प्रदर्शित करती हैं।

वक्र व वाग्विदग्ध शैली का प्रयोग अन्य कवियों द्वारा भी किया गया है किंतु जिस तरह सूरदास ने किया है वह अद्वितीय है अनुपम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

4. (क) 'कामायनी' के आधार पर जयशंकर प्रसाद के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी धारा के सबसे प्रखर रचनाकार 'कबीर' ने ईश्वर से मिलने की पीड़ा को विरह के माध्यम से व्यक्त किया है जिन्हें यह दोहा प्रमाणित करता है। इसे 'श्याम सुंदर दास' द्वारा सम्पादित 'कबीर ग्रंथावली' में संकलित किया गया है। यह 'विरह को अंग' से उद्धृत है

कबीर जी कहते हैं कि नैनों की बस आपको देखने की ही अभिलाषा है यह दिन रात आपको देखने की अभिलाषा में थकती भी नहीं है। कबीर पूछते हैं कि किस दिन आप मुझे दर्शन देंगें ऐसा दिन मेरे जीवन में कब आएगा।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अँखियाँ हरिदर्शन को भूखी पंक्ति के माध्यम से सूरदास जी ने भी यही भाव गोपियों के श्रीकृष्ण के दर्शन हेतु प्रदर्शित किया है।

विशेष

* दिन शब्द की आवृत्ति हुई है
* कबीर ने अन्यत्र भी कहा है

इस तन का दीवा करौं, मेल्यूं जीव
लोटी सींचौ तेल ज्यूँ, कब मुख देखौं पीव

* पंचमेल भाषा के लिए कबीर जाने जाते है जिसे सधुक्कड़ी भी कहा जाता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरि। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

'जायसी' के 'पद्मावत' में नागमती का वियोग वर्णन हिंदी साहित्य की अनुपम कृति है शुक्ल जी के इस कथन को ये पंक्तियाँ प्रमाणित करती हैं। इन्हें 'पद्मावत' काव्य से लिया गया है जिन्हें 'मलिक मुहम्मद जायसी' द्वारा रचा गया है।

बारहमासा तथा षड्ऋतुवर्णन द्वारा 'नागमति वियोग खण्ड' में नागमति के वियोग को दर्शाया गया है।

नागमति कह रही है अब भादो का ~~आग~~ आगमन हो चुका है जिसमें ~~अंध~~ रात्रि लम्बी भी होगी तथा अंधकार युक्त होगी ऐसी रात्रि में बिना पति के मेरा गुजारा कैसे होगा। नागमति को लगता है कि बिना पति के उसका

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this

सूनापन ह उसे ऐसे डस रहा है मानो साँप डस रहा हो। इस विरह से उसका हृदय फट रहा है और बादल में बिजली की गर्जन इस गंभीरता को और बढ़ा रहे हैं। जिस प्रकार बादल लगातार वर्षा कर रहे हैं वैसे ही आंखों से आँसूओ की वर्षा हो रही है। पूर्वा के लगने के साथ ही पृथ्वी जल में समा ली जाएगी और मैं विरह में।

विशेष

* भाषा - अवधी , छंद - चौपाई
* झंकोरि - झंकोरी के माध्यम से ध्वन्यात्मक सौंदर्य
* पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी - अतिश्योक्तिपूर्ण अलंकार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

रामचरितमानस के पश्चात् 'राम' को आधार लेकर "सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'" ने पौराणिक राम के मिथक के साथ 'राम की शक्तिपूजा' लिखी। जिसमें राम को मानव के रूप में दर्शाया गया है। सूर्यास्त के बाद सभा में 'राम' की वेशभूषा का चित्रण इन पंक्तियों में निराला द्वारा किया गया है।

रघुनायक राम आगे अपने कोमल चरणों के साथ थे हैं। जिनकी कमर पर धनुष बाण लटके हैं। सिर पर दृढ़ता से जड़ा मुकुट है जिससे उनके बालों की कुल रेखाएँ खुलकर उनके कंधों तक आ गयी हैं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनकी भुजाएँ तथा छाती विशाल है

एक तरफ निराला ने राम की विशेषताओं को बताया अगली पंक्तियों में राम के नैराश्य भाव को बताते है यहीं निराला ने ईश्वरीय राम का मानवीकरण किया। उन पर दुर्गम पर्वत की भांति अंधकार छाया है। जिससे इनकी आंखें ऐसे चमक रहीं हो मानो बहीं तार हों।

विशेष :-

* तत्सम बहुल भाषा का प्रयोग
* कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण समास शैली का प्रयोग
* भाषा - खड़ी बोली, छंद मुक्तक
* पंक्तियाँ दृश्य बिंब उत्पन्न कर रही हैं।
* "उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार में उपमा अलंकार"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि 'मैथिली शरण गुप्त' जी की रचना "भारत भारती" से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में भारतीय संस्कृति के तत्वों की खोज अतीत के पन्नों में की जा रही है।

गुप्त जी ने भारतवर्ष के अतीत को सुनहरा माना है। भारत के अतीत में सुगायक जिस प्रकार श्रुतियाँ सुनाया करते थे वह सब अब बंद हो गया है अब उसकी जगह लोग अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। ~~सोते~~ हे हिंदुओं को संबोधित करते हुए कहते हैं कि तुम सोते रहे हम यहाँ मौज करते रहे तो ऐसी कौनसी जाति है जो नष्ट नहीं होगी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यह 'हिंदू' शब्द का प्रयोग भारत भाषी को आलोचना के घेरे में भी खड़ा करता है तथा गैर हिंदू में प्रसिद्धि से रोकता है। गुप्त जी यहाँ अकर्मण्यता पर व्यंग्य कर रहे हैं।

विशेष

* उद्बोधनात्मक शैली के साथ व्यंग्यात्मकता
* अंतिम पंक्ति में प्रश्नात्मक शैली
* भाषा - खड़ी बोली, मुक्तक छंद
  शब्द शक्ति - अभिधात्मक
* लयात्मकता व गीतात्मकता की उपस्थिति ('ते', तथा 'हों' वर्ण की आवृत्ति)

कृपया इस स्थान ... कुछ न लिखें।
(Please don't wri... anything in this s...)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

जापानी लोक कथा के विषय पर आधारित 'असाध्य वीणा' 'अज्ञेय' की एक महत्वपूर्ण कृति है जिसमें उनकी प्रयोगशीलता से हमारा साक्षात्कार हुआ है।

असाध्य वीणा अभी तक नहीं साधी जा सकी इसके कारणों की पड़ताल इन पंक्तियों में की गयी है।

राजा द्वारा कथन है कि उनके सभी कलावंत हार गए और वीणा साध्य नहीं जा सकी। अज्ञेय ने जिस सृजनात्मक रहस्यवाद की परिकल्पना की है जिसके बीज यहाँ मौजूद

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। वीणा को साधने हेतु ज्ञान, गुण, आत्मनिवेदन तथा अहं के समर्पण की आवश्यकता होती है। अब तक के कलावंत इसे ज्ञान व गुण के आधार पर साधने का प्रयास कर रहे थे अर्थात् बाह्य धरातल पर ही जबकि इसकी साधना मानसिक धरातल पर संभव है।

अगली पंक्तियों में राजा के आस्थावान होने का प्रतीक है कि यह वीणा अवश्य साधी जाएगी और वीणा के निर्माता वज्रकीर्ति का परिश्रम व्यर्थ नहीं होगा। किंतु 'सच्चे स्वर सिद्ध' द्वारा यह संभव है।

विशेष :-

* 'सच्चा स्वर सिद्ध' में अनुप्रास योजना
* छंद मुक्त, भाषा- खड़ी बोली

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर एक संत, समाजसुधारक, भक्त व कवि के रूप में स्थापित हैं। कबीर ने अपने समय की परिस्थितियों व सामाजिक व्यवस्थाओं, सामंतवादी चेतना पर कुठाराघात किया है। ये सभी अभिव्यक्तियाँ कबीर के काव्य को देश काल की परिस्थितियों से बाहर निकालकर वर्तमान में भी प्रासंगिक बना देती है।

कबीर ने धर्म के बाह्य आडम्बरों पर चोट की है। हिंदू मुस्लिम धर्म की व्याप्त बुराईयों को आधार बनाकर लिखा है-

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़
तातें सो चाकी भली पीस खाय संसार

कांकर पाथर जोरि के मस्जिद लिया चुनाय
ता ऊपर बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

धर्म का यह रूप अभी भी प्रचलित है। अंध-विश्वास जादू टोना आदि देखने को मिलता है धर्म के नाम पर बाह्य आडम्बरो पर एक बड़े संसाधन का व्यय किया जा रहा है। धर्म की मूल संवेदना को नहीं पहचाना जा रहा है जिसे पहचानने का संकेत कबीर ने यह कहकर दिया है-

हिंदु कहत है राम है हमारा मुस्लिम रहमाना
आपस में दोउ लड़त है, राम नाम का मर्म है जाना

इसी के तहत उन्होंने सांप्रदायिक विवाद को निरर्थक घोषित करते हुए सांप्रदायिक समन्वय चेतना को उद्घाटित किया है। हिंदु मुस्लिम सांप्रदायिकता वर्तमान में भी विद्यमान है गुजरात दंगों, मुजफ्फर दंगों इसके वर्तमान उदाहरण हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर ने वर्ण व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था पर भी चोट की है। वे लिखते है

जो तू बामन बमनी जाया तो आन बाट से क्यो नहीं आया

जाति पाँति पूछै ना पूछै कोई
हरि को भजे हरि का होई।

सामाजिक स्तरीकरण का अवधिर रूप वर्तमान में भी प्रचलित है जिसमें कुछ जातियों को निम्न मानकर भेदभावपूर्ण बर्ताव किया जाता है जनजातियाँ तथा दलित वर्ग इसी असमानता का शिकार हो रहे हैं। वह कभी रोहित वेमुला के रूप में सामने आती है तो कभी बंदायु कांड के रूप में। जिस सामाजिक समता की बात कबीर ने की है वह वर्तमान में भी स्वप्न की भांति है

कबीर ने किताबी ज्ञान से ज्यादा व्यवहारिक ज्ञान को महत्व दिया। वे कहते हैं-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

पोथि पोथि जग मुआ पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय॥

इसी किताबी ज्ञान के आधार पर नीतियों का योजनाओं का निर्माण किया जाता है। व्यवहारिक तथा वास्तविक समस्याओं को पहचानने की कोशिश नहीं की जाती। ७ इसी के चलते नक्सलवाद अलगाववाद की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

कबीर के विचार चाहे वह सामाजिक हों, धार्मिक हों या वर्ग व्यवस्था के लिए हो आज भी प्रासंगिक है क्योंकि ये समस्याएँ जड़त: समाप्त नहीं हुई हैं। कबीर की प्रगतिशीलता इन्हें विशिष्ट भी बनाती है और प्रासंगिक भी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन एक जन कवि हैं। जनकवि इसलिए हैं क्योंकि वे न केवल जन साधारण की भावनाओं को समझते हैं बल्कि उनकी समस्याओं व उनके सामान्य जन जीवन को अपने साहित्य में शामिल करते हैं। इस क्रम में वे किसी विचारधारा की पांडित्यता को भी तोड़ते हुए नजर आते हैं-

जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ
जन कवि हूँ साफ कहूँगा क्यों हकलाऊँ।

नागार्जुन की यह जनवादी चेतना ही है जो उनको लोक विषयों व जनता से तादात्म्य स्थापित करवाती है। नागार्जुन ने जनता की भूख की समस्या को उठाया है और इसे किसी भी विचारधारा से ऊपर बताया है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

क्योंकि विचारधारा की उत्पत्ति भी पेट भरने के बाद होती है

क्या है दक्षिण क्या वाम जनता को है रोटी से काम

इसी क्रम में उन्होंने "अकाल और उसके बाद" में अकाल की त्रासदी का चित्रण किया है।

कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास
कई दिनों तक भीत पर टंगी छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की हालत रही शिकस्त

जनकवि ही थे इसीलिए ~~उन्होंने~~ बेलछी कांड ने अंतर्मन प्रभावित किया और उन्होंने यह कहकर

रोता हूँ, लिखता जाता हूँ
अपने मन को बेकाबू पाता हूँ।

हरिजन गाथा की रचना की। जिसमें न केवल बेलछी कांड का चित्रण किया बल्कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज को असमानता के विरुद्ध होने वाली हिंसक क्रांति के लिए सचेत किया।

धन बल जन बल सब जुटेगा
हथियारों की कमी ना होगी।

नागार्जुन ने कल्पना को खारिज किया और 'जाने दो वह कवि कल्पित था' कहकर यथार्थ से जुड़ने की प्रेरणा दी।

नागार्जुन ने जनता के विषय चुनने के क्रम में कटहल पर कविता लिखी एक बस ड्राइवर पर कविता लिखी। जनप्रतिबद्धता का अनुमान इन्हीं पंक्तियों से लगाया जा सकता है।

वह ड्राइवर है तो क्या हुआ
एक बच्ची का पिता तो है।
इसीलिए, गीयर से ऊपर टांग रखी है
पांच चूड़ियाँ होरी, गुलाबी ।।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

ब्रह्मराक्षस एक पौराणिक मिथक है जो आधुनिक संदर्भों में देखें तो एक मध्यवर्गीय बुद्धिजीव का प्रतीक है। जो एक पाप द्वारा से गुजर रहा जिसके कारण प्रेत योनि में भी बेचैन है।

ब्रह्मराक्षस की मूल समस्या ही उसकी अस्तित्वादी मान्यता तथा खंडित व्यक्तित्व है। ब्रह्मराक्षस की अस्तित्ववादी मान्यता उसे आत्मचेतस बनने की ओर धकेलती है किंतु उसका नैतिक मन उसे विश्वचेतस बनने की ओर ढकेलता है और खण्डित व्यक्तित्व सामने आता है। आत्मचेतस के साथ पाप विश्वचेतस हो जाने का भाव ही उसके व्यक्तित्व को खण्डित करता है।

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आत्मचेतस किंतु
इस व्यक्तित्व में थी प्राणमय क्रंदन
विश्वचेतस बे-बनाव

यह प्राणमय क्रंदन ही इस खंडित व्यक्तित्व का परिचायक है। मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का व्यक्तित्व इसलिए खण्डित हुआ क्योंकि वह विश्वचेतस बनने की प्रक्रिया को अतिरेकवादी पूर्णता व गणितीय व ज्यामितीय सिद्धांतों पर खोज रहा था जो कि यंत्यंत कठिन कार्य है।

अच्छे व बुरे के संघर्ष से
भी उग्रतर होता है
अच्छे व और ~~और~~ अच्छे का संगर
गहन किञ्चित सफलता
अति अल्प असफलता।

इस संघर्ष से इसका व्यक्तित्व जूझता रहा है और अंततः इसकी मृत्यु हो जाती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

वह बोध में किस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया।

ब्रह्मराक्षस केवल अस्तित्ववादी नहीं है वह विश्वचेतस होने का प्रयास कर रहा है यद्यपि प्रक्रिया गलत चुनी। इसी को मुक्तिबोध ने पहचानते हुए उसके शिल्प, बनने की परिकल्पना की है ताकि उसे मुक्ति दिला सके क्योंकि ब्रह्मराक्षस गलत नहीं था। 'मैं' के रूप में उपस्थित होकर उसके व्यक्तित्व को पूरा करना चाहते है'-

'मैं' ब्रह्मराक्षस का सजल उर
शिल्प होना चाहता
ताकि उसके अधूरे कार्यों को
उसकी वेदना के स्रोत को
पूर्व निष्कर्षों तक पहुंचा सकूँ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation